"युग की पुकार अनसुनी न करें"

"बिल्ली अपने छोटे बच्चों को शिकार खेलना सिखाती हैं , तो चुहिया घायल करके उनके सामने छोड़ देती हैं। बच्चे उछल - कूद करके तरह -तरह के दांव - पेंच खेलते हैं और उस घायल चुहिया को मार खाते है। बिल्ली चुपचाप यह सारा दृश्य देखती है और बच्चों के प्रशिक्षण एंव पुरुषार्थ पर प्रसन्न होती है। साहस की आध्यात्मिक विभूति उपलब्ध करने के उद्देश्य से प्रिय परिजनों के सामने हमने दो चूहे घायल करके छोड़ दिये हैं। एक का नाम है विचार निर्माण , दूसरे का समाज सुधार। इन कार्यों में संलग्न होने के लिए बहुत दुलार और फ़टकार के साथ हम अनुरोध करते रहे हैं। इसका मूल कारण यह नहीं कि यह दैवी प्रयोजन उनके बिना पूरा न हो सकेगा। वे सहयोग न करेगें तो गाड़ी रुक जाएगी। युग परिवर्तन की महान प्रक्रिया दैवी प्रेरणा के बलबूते पर चल रही है और महाकाल उसके लिए आवश्यक साधन जुटा रहे है। कोई तेजस्वी आत्मा अकेले भी परशुराम की तरह प्रस्तुत प्रयोजन को पूरा करके रख सकती है। जो सुनिश्चित भवितव्यता है वह होकर रहेगी। यह सड़ा हुआ वातावरण देर तक जीवित नहीं रह सकता। इसका स्थान ग्रहण करने के लिए सुसंपन्न परिस्थितियाँ बनकर लगभग तैयार हो चुकी हैं। स्थांतरण मात्र बाकी हैं , सो सब कुछ अपने ढ़ंग से हो रहा हैं। कोई यह समझता हो कि हम न करेंगे तो गाड़ी रुक जाएगी , तो वह भले ही अब तक की तरह आगे भी खुशी-खुशी मूर्च्छा में पड़ा रहे , भले ही अपना हाथ खींचं ले। अगले ही दिनों प्रस्तुत परिवर्तन अपने आप आ धमकेगा। हानि सबसे बड़ी एक ही होगी कि इस महान अभियान में भाग लेकर जो दक्षता , आत्म-तुष्टि और कीर्ति पाई जा सकती थी , उससे वंचित रह जाना पड़ेगा। अलभ्य अवसर की उपेक्षा करनें वालो को समय निकलने पर जो पश्चाताप सहना पड़ता है , उसकी असहनीय व्यथा भी सहनी पड़ेगी। अच्छा होता हमारे अनुचर -----सच्चे अर्थों में वशंधर --अवसर का लाभ उठाते और अपने कर्तृत्व से आत्म-कल्याण एवं लोकमंगल की भूमिका में उतरते। चुहिया घायल पड़ी है। बच्चे मुहँ मोड़ लें तो बिल्ली का कुछ बिगड़ने वाला नहीं , बच्चे ही अप्रशिक्षित और भूखे रह जाएँगें।"

****

पेज-144, पुस्तक-"गुरुवर की धरोहर, भाग-3"

"मित्रो ! अपना यह मिशन कितना जबरदस्त मिशन है। इसको आगे बढ़ाने के लिए हमको उन आदमियों के पास जाना पड़ेगा, जिनके पास विचारशीलता भी विधमान है और क्षमता भी विद्यमान है। विचारशीलता नही है और क्षमता है, तो हमको यह कोशिश करनी पड़ेगी कि अपने मिशन की विचारधारा को, मिशन की पुस्तिकाओं को, मिशन के ट्रेक्टों को उनको बार-बार सुनाएँ और किसी प्रकार से इस तरीके से लाएँ कि वे हमारी विचारधारा के संपर्क में आएँ। अगर कोई आदमी हमारी विचारधारा के संपर्क में आ गया, तो यह बड़ी जलती हुई विचारधारा है, यह बड़ी तीखी और प्रखर विचारधारा है। सौ फ़ीसदी मरा हुआ आदमी हो, तब तो हम नहीं कह सकते, लेकिन कोई अगर जिंदा

आदमी होगा, तो उसको एक बार तड़फ़ड़ाए बिना, उसको एक बार हिलाए बिना नहीं रह सकती। जिन लोगो ने इन विचारों को पढ़ा है, वे आदमी काँपते हैं, हिलते हैं। उन आदमियों के अंदर एक स्पंदन पैदा होता है, फ़ुरेरी पैदा होती है "

****

**

"हिम्मत करने वाला आगे बढ़ता है - कठिनाईयों से वही जुझता है - प्रतिकूलताओं को अनुकूल बनाने की सफ़लता उसे ही मिलती है और ईश्वर की सहायता भी उसी के लिए सुरक्षित है। कायर और ड़रपोक की सहायता न मनुष्य करता है, न परमात्मा; क्योंकि यह सच्चाई सर्वेविदित है कि केवल साधनों के बल पर कोई आगे नही बढ़ सका। आगे तो गुण बढ़ाते हैं और उन गुणों में सर्व प्रधान हैं - साहस। जिसमें साहस नहीं, वह सफ़ल न हो सकेगा। जिसे असफ़लता ही मिलने वाली हैं, ऐसे कायर को कोई क्यों सहायता दें और क्यों अपनी उपलब्धि को निरर्थक बनाएँ ?"

****

****

"महाकाल की लोक सेवियों से अपेक्षा "

"नवसृजन की युग-पुकार को सुनने अपनाने और उस दिशा में कुछ करने क यदि सचमुच ही मन हो तो अन्तर में बसे लोभ - मोह और अंहकार के चक्रव्यूह को भेदना पड़ेगा। इसके बिना चासनी में पर फ़ँसाकर अदूरदर्शी मक्खी की तरह बेमौत मरने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। कल्पना को व्यवहार में उतारना हो तो कुछ साहस उभारना होगा और उसका सर्वप्रथम प्रयोग अभ्यास अपनी ही कुसंस्कारिता के विरोध में करना होगा, जिसने लोभ - मोह और अहंकार के रुप में हाथ, पैर और कमर को कसने में हथकड़ी, बेड़ी और बंधन रज्जु की भुमिका निभाई है। इस संदर्भ में जो जितना साहस कर सकेंगे, उनका मार्ग उतना ही प्रशस्त होता जाएगा, फ़िर उन्हे न कठिनाइयाँ हैरान करेंगी और न समस्याओं के कारण आगे बढ़ने में असमंजस करना होगा।"

****

****

"अपने देश का जनमानस दीन - दुर्बलों जैसा हैं। हजार वर्ष की राजनैतिक दासता और दो हजार वर्ष की विचार-विकृतियों ने हमें मानसिक द्रष्टि से एक पतित परिस्थिती में ला पटका हैं। उत्कृष्टता एंव आदर्शवादिता के विचार अब हमारें लिए एक कहने-सुनने भर के मनोरंजन मात्र रह गये हैं। कोई उन्हे

काम में नही लाता। काम में केवल प्रवंचनाएँ औए हीनताएँ ही लाई जाती हैं। आमतौर से हम ओछा जीवन जीने के आदी हैं। उसी ढ़र्रे ने प्रथा-परंपराओं का रुप धारण कर लिया हैं। जीवन जीने का व्यवहारिक स्वरुप इन दिनों इतना नीचा हैं कि उसे नर-पशुओं के उपयुक्त ही माना जा सकता हैं। इसी ढ़र्रे पर अपना सामाजिक जीवन लुढ़क रहा हैं। कहने भर के लिए कोई आदर्शवाद की दुहाई भले ही दे रहा हो , पर जब उसे नंगा करके परखा जाता हैं तो सड़ी-गली विकृतियों से भरी हुई ही उसकी अतःस्थिती प्रकट होती हैं। लोभ , मोह , तृष्णा , वासना , स्वार्थ , अहंकार , छल , दंभ , ईर्ष्या-द्वेष , जैसे दुर्गुण ही अब मानव की गतिविधियों का सुत्र-संचालन करते हैं। अपनी प्रवृत्तियाँ इन्ही से प्रेरित रहती हैं। धर्म और सदाचार की चर्चा एक फ़ेशन मात्र रह गई हैं , व्यवहार में उसे प्रयुक्त करना अनावश्यक और मूर्खतापूर्ण माना गया हैं।"

****

प. श्रीराम शर्मा आचार्य

"विचार क्रान्ति अभियान":

"युग निर्माण योजना":